REVIEW OF RESEARCH

छत्तीसगढ़ राज्य के वनों का आर्थिक एवं सामाजिक महत्व

Mr. Nand Kishor Uraon[1] and Dr. Prabhakar Pandey[2]

[1]Research Scholar- Commerce ,
Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)
[2] HOD- Commerce , Dr. C. V. Raman University,
Kota Bilaspur (CG).

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सारांश

किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारी सभ्यता, इतिहास एवं प्रगति में इनका बहुत अधिक महत्व है। छत्तीसगढ़ दूसरा सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला प्रदेश है। यहॉ की वनों से सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरण व औषधीय महत्व नितान्त आवश्यक है। पर्यावरण संतुलन हेतु विषैली गैसों को पीकर प्राणवायु प्रदान करने का सत्कार्य वृक्ष ही करते है।

शब्दकुंजी – छत्तीसगढ़, वन, आर्थिक, सामाजिक, महत्व.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ अंचल जिस प्रकार धान के अधिकाधिक उत्पादन के कारण ''धान का कटोरा'' कहा जाता है। उसी प्रकार यह क्षेत्र वन सम्पदा के नाम से सम्पूर्ण देश में एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अपनी सघन एवं विविध वन–सम्पदा तथा वन्य–प्राणियों का अभी भी प्रदेश के वनों में विविधता एवं बहुलता से उपलब्ध होने के कारण प्रदेश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जा रहा है। भौगोलिक स्वरूप के साथ वनों की सघनता के कारण ही यह क्षेत्र बाहा जगत से अछूता रहा है, जिससे यहॉ की अपनी विशिष्ट संस्कृति मोटे तौर पर अपने मूल स्वरूप में आज भी विद्यमान है।

छत्तीसगढ़ प्राकृतिक वन–सम्पदा

''जिलानुसार वन–क्षेत्रफल''

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	अति सघन वन	मध्यम सघन वन	खुला वन	कुल	भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत	झाड़ी
बस्तर	14974	1349	4333	2329	8011	53.50	11
बिलासपुर	8270	338	1623	533	2494	30.16	6
दंतेवाड़ा	17634	1082	6167	4079	11328	64.24	22
दुर्ग	8549	44	521	202	767	8.97	4
जांजगीर–चांपा	3852	4	26	125	155	4.02	2
जशपुर	5838	111	1485	568	2164	37.07	11
कांकेर	6506	215	2044	835	3094	47.56	2
कबीरधाम	4223	70	1126	389	1585	37.53	4
कोरबा	6599	203	2306	840	3349	50.75	6
कोरिया	6604	79	2605	1423	4107	62.19	3
महासमुन्द	4789	4	534	422	960	20.05	8
रायगढ़	7086	126	1697	723	2546	35.93	13
रायपुर एवं धमतरी	16468	189	3837	1435	5461	33.16	7
राजनांदगाँव	8068	29	1771	720	2520	31.23	4
सरगुजा	15731	320	4836	1977	7133	45.34	16
कुल	135191	4163	34911	16600	55674	41.18	119

स्त्रोत :–भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2017 भूगोल पृश्ठ–संख्या 151 ''जिलानुसार वन–क्षेत्रफल''

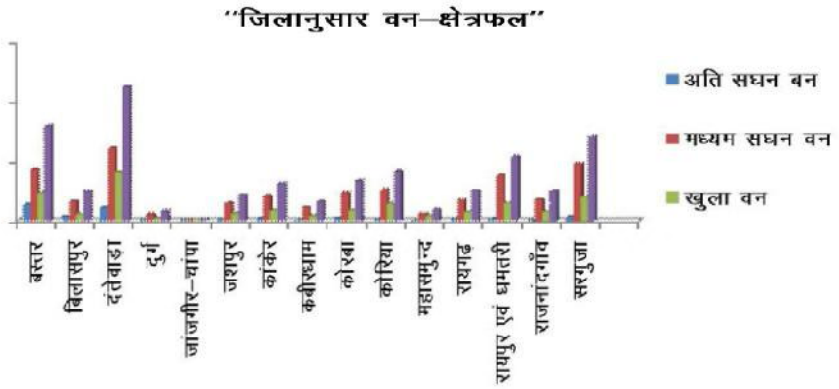

क्षेत्रफल की दृष्टि से	सर्वाधिक वन सबसे कम वन	बीजापुर रायपुर
प्रतिशत	सर्वाधिक वन कम वन	सुकमा रायपुर

(अ) प्रशासकीय आधार पर वनों का वर्गीकरण :–

(1) आरक्षित–वन (2) संरक्षित–वन (3) अवर्गीकृत–वन

(1) आरक्षित वन (Reserved-Forest)

ये वन आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते है। इन वनों का कुल क्षेत्रफल 25782.17 वर्ग कि.मी. है, जो प्रदेश के कुल वनों का 43.13 प्रतिशत है। इन वनों का प्रबंधन सुव्यवस्थित ढंग से किया जाता है। इनकी सुरक्षा और विकास की निश्चित योजनाएँ होती है। पर्यावरण, जैव–विविधता, वन–सम्पदा, वन्य–जीव, भूमि–संरक्षण के लिए जलवायु की दृष्टि से एवं लकड़ी के सम्भरण हेतु बाढ़ की रोकथाम आदि की सुरक्षा एवं संरक्षण की दृष्टि से इन्हें आरक्षित रखा गया है। यहॉ अनाधिकृत प्रवेश आदि भी वर्जित होता है। इन वनों में लकड़ी काटने तथा पशुचारण पर प्रतिबंध रहता है।

इन वनों से कीमती एवं उपयोगी वनोत्पाद मिलते है। इस प्रकार के वनों में मवेशियों को चराने की मनाही रहती है तथा लकड़ी–काटने पर भी प्रतिबंध रहता है क्योंकि यह सरकारी सम्पत्ति मानी जाती है। व्यापारिक महत्व वाले वनों को ही आरक्षित वन घोषित किया जाता है। इन वनों में विभाग द्वारा जो भी कार्य किए जाते है वे वनवर्धन एवं रखरखाव के लिए होते है। उत्पादन अथवा आयमूलक गतिविधियॉ इस क्षेत्र में नहीं की जाती। राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण, बायोस्फीयर आरक्षित वनों की श्रेणी में आते है। इन वनों का आरक्षण विधि प्रक्रिया द्वारा अधिसूचित होता है।

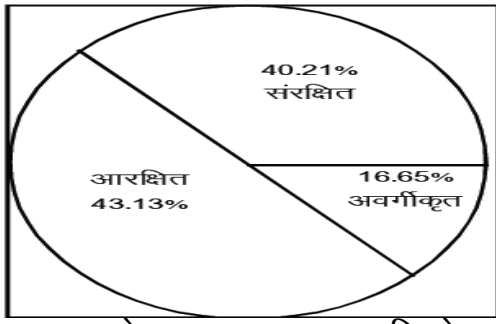

वन–क्षेत्र का विभाजन रिकार्ड के अनुसार	
आरक्षित वन–क्षेत्र	25782.167 वर्ग कि.मी.
संरक्षित वन–क्षेत्र	24036.100 वर्ग कि.मी.
अवर्गीकृत वन–क्षेत्र	9954.122 वर्ग कि.मी.
कुल वन–क्षेत्र	59772.389 वर्ग कि.मी.

स्त्रोत :– मुस्कान पब्लिकेशन्स, प्राकृतिक, पृश्ठ–संख्या 108

''छत्तीसगढ़ राज्य के जिलेवार वनों का वर्गीकरण (वर्ग कि.मी. में)

क्रं.	जिला	आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत वन	कुल
1	रायपुर	1908.5	1888.46	615.77	4412.73
2	धमतरी	2056.32	69.22	-	2125.54
3	महासमुंद	756.92	322.4	423.65	1502.97
4	कांकेर	1583.967	733.549	1040.854	3358.37
5	बस्तर	3359.346	2083.856	1669.192	7112.394
6	दंतेवाड़ा	5179.792	3125.742	1711.769	10017.303
7	दुर्ग	635.07	113.23	114.91	863.21
8	राजनांदगाँव	943.17	1709.15	270.69	2923.01
9	कवर्धा	706.57	921.85	223.83	1852.25
10	सरगुजा	2473.139	6181.829	-	8654.968
11	कोरिया	2001.154	1528.143	-	3529.297
12	रायगढ़	1597.615	580.998	1064.402	3243.015
13	जशपुर	1147.706	588.075	1016.504	2752.285
14	कोरबा	-	2834.968	1352.403	4187.371
15	जॉजगीर–चांपा	151.461	59.303	39.302	250.066
16	बिलासपुर	1281.387	1295.327	410.846	2987.56
	कुल योग	25782.177	24036.1	9954.122	59772.399

स्त्रोत :– उपकार, छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ, पृष्ठ–संख्या 86

(ब) प्रजातीय आधार वनों का वर्गीकरण :–

प्रजातीय–आधार पर एवं पर्यावरण के विभिन्न कारकों जैसे जलवायु, मिट्टी, स्थान के कारण जैविक प्रभाव के विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते है, जो इस प्रकार है एवं इन्हें प्रमुख रूप से 4 भागों में विभाजित किया गया है।

(1) साल– वन (2) सागौन – वन
(3) बॉस – वन (4) मिश्रत – वन

वनों के प्रकार	वन–क्षेत्र वर्ग कि.मी. में	प्रतिशत में
साल	24244.878	40.56
सागौन	5633.131	9.42
मिश्रित	26018.00	43.53
बाँस	3879.00	6.49
कुल	59772.389	100.00

स्त्रोत :–मुस्कान पब्लिकेशन्स, प्राकृतिक, पृष्ठ–संख्या 107

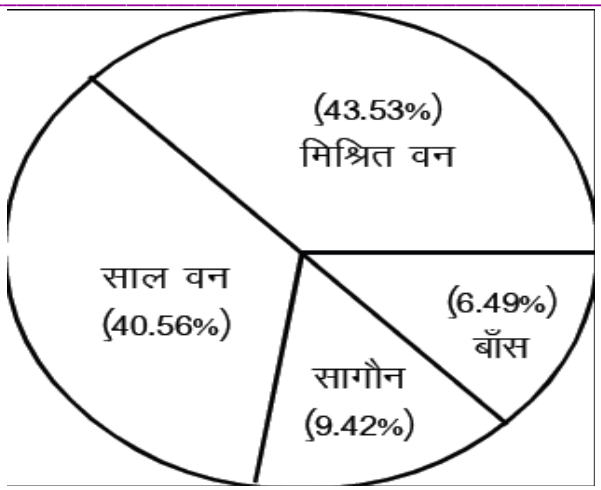

"छत्तीसगढ़ वनस्पति "

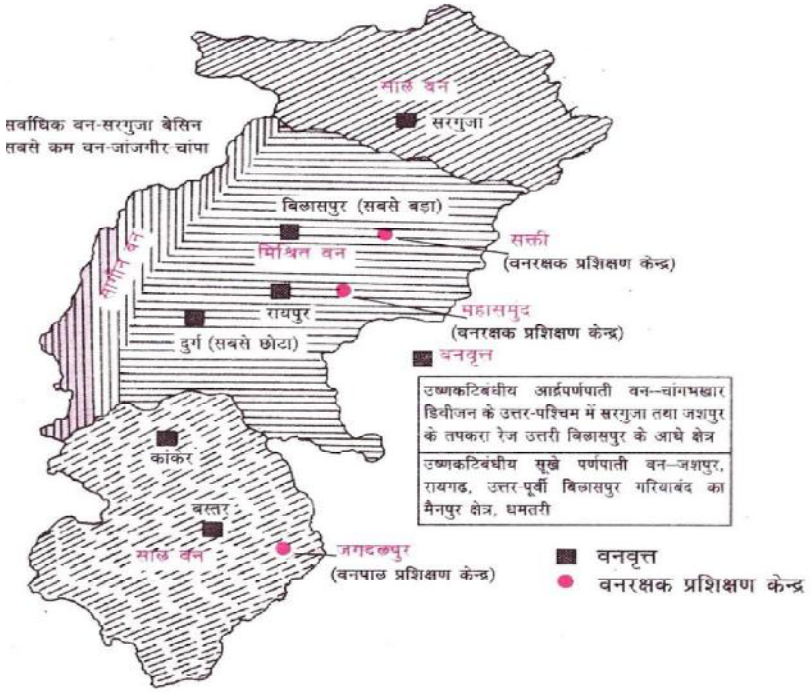

स्त्रोत :– छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान, ल्यूसेन्ट पब्लिकेशन, पृष्ठ–संख्या 85

प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वनों का आर्थिक एवं सामाजिक महत्वः–

वनों का महत्व मात्र मानव जीवन के लिए ही नहीं अपितु सृष्टि में पाये जाने वाले समस्त जीवों के लिये है। वनस्पति मानव जीवन का आधार है। पर्यावरण संतुलन के लिए वनस्पति जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही कृषि, खाद्य सुरक्षा का आधार है। प्रकृति ने हमें वनस्पतियों की अपार सम्पदा दी है। किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वन हमारी सभ्यता, इतिहास एवं प्रगति के प्रतीक है। प्रचीनकाल से ही वन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे है। उस समय इनका विस्तार अधिक था, किन्तु आज भी जीवन में इनका बहुत अधिक महत्व है। फल–फूल तथा सूखी टहनियों से न्यूनतम वार्षिक लाभ 100 रूपये

माना जा सकता है। एक युवा वृक्ष की एक वर्ष की कमाई का आकलन करें तो लगभग 16,300 रूपये वार्षिक आय होगी । शासन की नीति के अनुसार वृद्वा की आयु 100 वर्ष आंकी गई है तो शेष 50–60 वर्षो में एक वृक्ष 80 लाख रूप्ये मूल्य की हमारी सेवा करता है। जीवित रहने के लिये वृक्ष मनुष्य को शुद्ध प्राण वायु प्रदान करते है, आरोग्यता हेतु प्राणदायिनी जड़ी–बूटियॉ उपलब्ध कराते है, क्षुधा शान्त करने हेतु सुस्वाद कंद, मूल, फल आदि वृक्षों से प्राप्त होते है, अनेकानेक अद्योगों के लिये कच्चा माल वृक्षों से ही प्राप्त होता है। पर्यावरण संतुलन हेतु विषैली गैसों को पीकर प्राणवायु प्रदान करने का सत्कार्य वृक्ष ही करते है।

स्वर्गीय पं. जवाहरलाल नेहरू का कथन है 'उगता हुआ वृक्ष प्रगतिशील राष्ट्र का प्रतीक है।'' इसी संदर्भ में चटबरक लिखते है, वन राष्ट्रीय सम्पदा है तथा किसी राष्ट्र के विकास के लिए वनों की नितान्त आवश्यकता है। यह केवल ईधन की लकड़ी ही प्रदान नहीं करते वरन् एक बड़ी संख्या में कच्चा माल तथा राष्ट्र की आय के स्त्रोत भी है।'' छत्तीसगढ़ प्रदेश असम के बाद दूसरा सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला प्रदेश है। यहॉ की अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से वनों से लाभान्वित है। वनों से मुख्य सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय व औषधीय महत्व निम्नलिखित है।

1. सामाजिक – महत्व

छत्तीसगढ़ आदिवासी बहुल राज्य है। यहॉ के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तीज–त्यौहार, वस्त्र तथा आभूषण प्रथा–परम्परा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वनों पर आधारित है। उरॉव जनजाति साल–वृक्ष तथा बैगा जनजाति साजा वृक्ष की पूजा करते है।

2. आर्थिक–महत्व

आज भी जनजातियों के आजीविका का प्रधान संसाधन वनोपज है। राज्य सरकारों को वनोपज से 300 करोड़ से अधिक का राजस्व प्राप्त होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भवन–निर्माण, कृषि–उपकरण आदि के लिए इमारती लकड़ी वनों से प्राप्त होते है।

3. पर्यावरणीय–महत्व

किसी भी क्षेत्र या प्रदेश पर्यावरण संतुलन के लिए उस प्रदेश के भाग पर वन–क्षेत्र का होना आवश्यक है। वनस्पति अधिक वर्षा प्राप्त करते है। बाढ़, भू–स्खलन, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप नियंत्रित होता है। मृदा समूह होती है तथा मृदा–अपरदन नियंत्रित होता है।

4. ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में

वनस्पति ऊर्जा के नवीनीकरण स्त्रोत है। वनों से जलाऊ लकड़ी प्राप्त होता है, जो आज भी छत्तीसगढ़ के निवासियों के लिए लकड़ी प्रमुख ईधन है। साल, बीज, करंज, जैट्रोफा आदि के बीज बायोडीजल का स्त्रोत है।

5. औषधीय – महत्व

आयुर्वेदिक तथा वनौषधि दवाईयॉ वनों पर आधारित होते है। छत्तीसगढ़ के वनों के औषधि के कारण छत्तीसगढ़ को ''हर्बल–स्टेट'' की संज्ञा दी गयी है। सफेद मुसली, धृतकुमारी आदि औषधियॉ महत्व के वनस्पति बहुतायत में पाए जाते है।

उपरोक्त वनों से प्राप्त लाभों को हम दो वर्गो में विभाजित कर सकते है।

(अ) प्रत्यक्ष–लाभ (ब) अप्रत्यक्ष–लाभ

(अ) प्रत्यक्ष लाभ

वनों से हम प्रत्यक्ष रूप से निम्न प्रकार लाभान्वित होते है :–

1. वनों से कीमती इमारती लकड़ी एवं ईधन के लिए लकड़ी प्राप्त होती है।

2. मुलायम लकड़ी शीतोष्ण–कटिबन्ध के शंकुल वनों से प्राप्त होती है। इन लकड़ियों में सबसे मुख्य वृक्ष चीड़ का है, जिससे बढ़िया किस्म की लकड़ी प्राप्त हो जाती है। इनसे कागज की लुग्दी, दिया सिलाई की सलाईयॉ और चाय–पैक करने के खोखे बनाये जाते है।
3. कठोर लकडियॉ दो प्रकार की होती है शीतोष्ण कटिबन्धीय कठोर लकडियॉ ये पतझड़ वाले चौड़ी पत्ती के वृक्षों से प्राप्त होती है। उष्ण कटिबन्धीय कठोर लकड़ी यह विषुवत रेखीय प्रदेशों में वृक्षों से प्राप्त होती है। इनसे भी फर्नीचर बनाया जाता है।
4. व्यापारिक दृष्टि से तो नुकीली पत्ती वाले व नही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वनों से प्राप्त होने वाले पदार्थो का 80 प्रतिशत इन वनों से मिलता है।
5. वनों से विभिन्न प्रकार के कन्दमूल, फल–फूल तथा बीज स्थानीय लोगों के भोज्य–पदार्थ के रूप में उपयोग में आते है।
6. वन पशुपक्षियों की निवास स्थली रहे है जिनसे हमें मॉस, खाल, दॉत, सींग, बाल आदि उपयोगी उत्पाद प्राप्त होते है।
7. वन में कई प्रकार के औषधीय वृक्ष, घास एवं लताएँ मिलती है जिनके जड़ी, बूटी, फल–फूल, छाल, पत्ती, बीज आदि से अनेकानेक आयुर्वेदिक दवाईयों का निर्माण किया जाता है।
8. वनों से उद्योगों के लिए कच्चे माल की प्राप्ति होती है। कागज, लाख, बीड़ी, कोसा, माचिस, अगरबत्ती आदि उद्योग वन पर ही आश्रित होते है।
9. वन कई लोगों को रोजगार प्रदान करने में सहायक होते है। जैसे वनोत्पादों के एकत्रण, वृक्षारोपण वनों की कटाई एवं सुरक्षा हेतु अधिक लोगों की आवश्यकता पड़ती है।
10. वन आय के प्रमुख स्त्रोत होते है। छत्तीसगढ़ प्रदेश की कुल–आय में वनों का 20 प्रतिशत योगदान है।
11. भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है और पशुओं के लिए वनों से चारा प्राप्त होता है।
12. वनों से विभिन्न प्रकार की वनोपज एवं वन्य – पदार्थ प्राप्त होते है।
13. वन लोगों को रोजगार उपलब्ध कराते है। वन तथा सबंधित कार्यो में अनेक व्यक्ति संलग्न है। ये व्यक्ति विभिन्न कार्य करते है जैसे – लकड़ी–काटना, लकड़ी–चीरना, गाडियॉ–ढोना, नावें तथा रस्सी–बनाना, गोंद, खाल, राल, कन्द–मूल, फल आदि एकत्रित करना।
14. वन–पशुचरण के लिए विस्तृत चारागाह उपलब्ध कराते है जिससे दुग्ध उद्योग में सहायता मिलती है।
15. वन–क्षेत्र आदिवासियों की आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है।
16. वनों से विभिन्न प्रकार के कन्द–मूल, फल प्राप्त होते है जो गरीबों की आजीविका का साधन है।
17. वनों से भवन – निर्माण सामग्री उपलब्ध होती है।
18. वनों से सरकार को शुल्क के रूप में आय प्राप्त होती है।
19. वनों से गौण उपजें प्राप्त होती है। इसके अलावा कच्चा माल एवं अनेक वस्तुएँ प्राप्त होती है जिन पर अनेक उद्योग – धंधे निर्भर है। वनों से प्राप्त पत्तो, छालों इत्यादि से कागज बनाया जाता है। गौण वस्तुओं के निर्यात से सरकार को आय प्राप्त होती है।
20. वनों से प्रचुर मात्रा में इमारती लकड़ी की प्राप्ति होती है। इमारती लकड़ी प्रदान करने वाले वृक्षो से सागौन, शाल, शीशम, देवदार तथा चीड़ उल्लेखनीय है।
21. प्रदेश के वनों से प्रतिवर्ष लगभग 10 करोड़ रूपये के बहुमूल्य पदार्थ निर्यात हेतु प्राप्त होते है।
22. वनों का उपयोग करने से राजस्व एवं रॉयल्टी के रूप में प्रतिवर्ष सरकार को 50 करोड़ रूपये से अधिक की पूँजी प्राप्त होती है।
23. वनों से विभिन्न प्रकार के वनोपज एवं वन्य–पदार्थ प्राप्त होते है।
24. वनों से वन्य जीव–जन्तुओं को संरक्षण प्राप्त होता है।

(ब) अप्रत्यक्ष लाभ

वनों से निम्नलिखित अप्रत्यक्ष–लाभ प्राप्त होते है :–

1. कहावत है कि ''वन वर्षा बुलाते है'' वास्तव में वन वायु में नमी लाते है तथा वर्षा कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
2. वर्षा, बाढ़, भूमि–अपरदन, भू–स्खलन आदि की रोकथाम में सहायक होते है।
3. वन भूमिगत जल के स्तर को बनाये रखने में सहायक होते है।
4. वन पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखते है। वातावरण में मौजूद धुआँ, धूल, कार्बन एवं अन्य प्रदूषक रसायनों से मानव–जीवन को सुरक्षा प्रदान करते है।
5. वन तापमान को कमर करते है। वन–क्षेत्रों की तुलना में वन–विहित क्षेत्र अधिक गर्म रहते है।
6. पौधे हानिकारक कार्बन–डाईऑक्साइड को ग्रहण करते है तथा ऑक्सीजन प्रदान करते है। एक वृक्ष 50 हजार किलोग्राम ऑक्सीजन देने में समर्थ होता है।
7. सधन वन मृदा–अपरदन को रोककर मिट्टी के उपजाऊपन को बनाये रखते है।
8. हरे भरे वन प्राकृतिक सौन्दर्य में श्रीवृद्धि करते है जिससे पर्यटन स्थलों का विकास होता है।
9. पारिस्थितिक – संतुलन बनाये रखने में वनों का होना अनिवार्य है।
10. वनों में सुन्दर पशु–पक्षी पाये जाते है जो मन को लुभाते है।
11. घने वन वायु में नमी लाकर वायुमण्डल के तापमान को कमर करते है तथा जलवायु में परिवर्तन होने से वर्षा कराने में सहायक होते है।
12. कृषि की अधिकांश सफलता वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा वनों पर निर्भर करती है।
13. वर्षा के जल का बहाव, वनों के कारण कम होने से बाढ़, भू–रखलन और भू–अपरदन नहीं होता तथा भूमिगत जल–स्तर में वृद्धि होती है।
14. वन–सम्पदा भूमि को अपनी जड़ों द्वारा जकडकर हवा और वर्षा के तेज बहाव से बचाकर मिट्टी के कटाव से रक्षा करती है।
15. घने–वन मिट्टी के कटाव को रोककर भूमि की उर्वरा शक्ति को नष्ट होने से बचाते है।

शोध के उद्देश्य

छत्तीसगढ़ में प्राकृतिक वन संपदा की विशेषताएँ तथा इनका आर्थिक एवं सामाजिक महत्व पर्याप्त से विस्तार करना।

सुझाव

1. वनों की सुरक्षा ग्राम सभाओं को दी जानी चाहिए। क्योंकि अधिकांश गॉव वनों के नजदीक ही बसे हुये है।
2. ऊँचाई वाले पहाडी ढालो पर स्थित वृक्षों के कटान पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगना चाहिये।
3. प्राकृतिक चारागाहों की कमी है। सरकार को ग्राम सभा की भूमि को एवं कृषि कार्य के लिये अयोग्य भूमि पर चारागाहों का विकास किया जाना चाहिये। संरक्षित एवं खुले वन क्षेत्रों जहॉ आग लगा दी जाती है। इस पर नियंत्रण पाना आवश्यक है।
4. सामाजिक वानिकी एवं कृषि वानिकी का विकास किया जाना चाहिए।
5. कृषि के लिये अयोग्य बंजर भूमि पर वनों का विकास किया जाय। फल एवं चारापत्ति वाले पेड़ो का विकास किया जाना चाहिये। जिससे पशुओं को चारापत्ति उपलब्ध हो सके।

निष्कर्ष

वन हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति मात्र नहीं है, समूचे देश के पर्यावरण से इनका गहरा संबंध है, अतः इनकी रक्षा करना एवं इनका विकास करना हम सभी का प्रमुख कर्त्तव्य है। प्राचीनकाल से ही वन तथा मानव के घनिष्ठ संबंध रहे है, किन्तु औद्योगिक क्रांति के पश्चात आर्थिक–विकास की होड़ में मानव द्वारा वनों का अंधाधुंध विदोहन किया गया है। फलतः स्थनीय, प्रादेशिक एवं विश्व स्तर पर अनेक पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। यथा–मृदा अपरदन में वृद्वि, बाढ व सूखे का प्रकोप, जीव–जन्तुओं तथा वानस्पतिक प्राजातियों का विलोपन आदि । इन सभी समस्याओं से बचने के लिये वनों के संरक्षण एवं संवर्द्वन हेतु उचित कदम उठाने चाहिये। पारिस्थितिकी विज्ञान का आधारभूत नियत यह है कि प्रत्येक वस्तु

जिनका पृथ्वी पर अस्तित्व है, अन्य वस्तुओं से अथवा परस्पर एक–दूसरे से जुड़ी है। प्रकृति के एक घटक को भी यदि बाधा पहुंचाई जाए या नष्ट किया जाए तो प्रकृति के अन्य घटकों में संकट पैदा हो जाएगा, जिससे अनेक विनाशकारी प्रभाव दिखाई देने लगते है। वन प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण कारक है तथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए अन्य कारकों की अपेक्षा सर्वाधिक है। अतः यदि हम अपने राज्य को आर्थिक विकास की ओर ले जाना चाहते है तो हमें लोगों में वनों के महत्व के बारे में जागरूकता लाना होगा।

संदर्भ–ग्रंथ

1. छत्तीसगढ़ भाग–1, मुस्कान–पब्लिकेशन, श्री डी.सी. पटेल, पृष्ठ संख्या 104, 105, 107, 108, 112, 113, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 135, 137
2. सामान्य–अध्ययन, टूटेजा–टयूटोरियल, पृष्ठ–संख्या 302, 303
3. छत्तीसगढ़ की भौगोलिक समीक्षा, डॉ. सन्तराम कमलेश, वसुन्धरा–प्रकाशन पृष्ठ संख्या 46, 47, 49, 50, 51, 53, 54
4. छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन डॉ. विजय कुमार तिवारी, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, पृष्ठ – संख्या 41, 44, 48, 49, 50, 51, 52
5. शिक्षादूत– छत्तीसगढ़–सहायक प्राध्यापक परीक्षा संदर्शिका, पृष्ठ–संख्या 17, 18, 19, 20, 21, 24, 25
6. संसाधन एवं पर्यावरण – डॉ. चतुर्भज मामोरिया, डॉ. एम.एम. सिसौदिया, साहित्य भवन पब्लिशर्स, पृष्ठ संख्या 122, 128, 134, 135
7. छत्तीसगढ़ सार संग्रह, शिक्षा दूत ग्रंथागार प्रकाशन, पृष्ठ–संख्या 49, 50
8. उपकार–छत्तीसगढ़ वृहद–संदर्भ, श्री संजय त्रिपाठी, श्रीमती चंदन त्रिपाठी, उपकार प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 84, 85, 86, 87, 88, 89, 91, 92, 96, 97
9. छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान, ल्यूसेन्ट–पब्लिकेशन, नीरज चौधरी, संजीव–कुमार, पृष्ठ संख्या 83, 84, 85, 86
10. भूगोल– बी.ए. तृतीय वर्ष, डॉ. चतुर्भज मामोरिया, साहित्य भवन–पब्लिकेशन्स, पृष्ठ संख्या 14, 15, 16, 17, 18
11. पूर्व एम.फिल. लघु–शोध प्रबंध
12. निगम के रिकॉर्ड से प्राप्त जानकारी।

Mr. Nand Kishor Uraon
Research Scholar- Commerce , Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)